

शेख फ़रीद – सबद १०
फ़रीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूँढेदी न लहां ॥
सलोक, शेख फ़रीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फ़रीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूँढेदी न लहां ॥
धुखां जिउ मांलीह कारणि तिन्ह्हा मा पिरी ॥ ८७ ॥

सार: आसानी से होने वाली जान-पहचान नज़दीकी का भ्रम दे सकती है लेकिन सच्चा तालमेल गहरे, चुनौतीपूर्ण और खामोश पलों में ही सामने आता है। रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हमारे कई साथी हो सकते हैं फिर भी जब हम किसी भरोसेमंद साथ की तलाश करते हैं तब कुछ ही लोग बचते हैं। हमारे आस-पास मौजूद हर कोई हमें भीतर से सही राह नहीं दिखा सकता, ठीक इसी तरह, कई विचार हमारा ध्यान खींचने की होड़ में रहते हैं लेकिन उनमें से कुछ ही हमें स्पष्टता और सच्चाई दे पाते हैं। इसका मुख्य सार स्पष्ट है कि ढेर सारे लोगों से जुड़ा होना गहन रिश्तों की ज़मानत नहीं देता। जो सचमुच हमारे दिल को छू जाए, वह आसानी से उपलब्ध चीज़ों से अक्सर कहीं ज़्यादा मुश्किल से मिलती है।

फ़रीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूँढेदी न लहां ॥

फ़रीद कहते हैं कि आम बातचीत के लिए तो बीस दोस्त मिल जाते हैं लेकिन जब किसी सच्चे साथी की तलाश करता हूँ तब कोई नहीं मिलता। इससे पता चलता है कि किसी से जान-पहचान होना, यह इस बात की ज़मानत नहीं देता कि वह व्यक्ति हमारे विचारों से मेल खाएगा या भरोसेमंद होगा, अर्थात् हमें कोई सच्चा मार्गदर्शक या सही मनःस्थिति मिल पाएगी।

धुखां जिउ मांलीह कारणि तिन्ह्हा मा पिरी ॥ ८७ ॥

मैं अपने सर्वव्यापी प्रिय स्रोत से मिलन के लिए धीमे-धीमे अंगार की तरह निरंतर सुलगता और तरसता रहता हूँ। यह उस स्थायी आंतरिक अवस्था को दर्शाता है जो परम सत्य से फिर से जुड़ने की चाह रखती है। (८७)

तत्त्व: शेख फ़रीद स्वयं को धीरे-धीरे सुलगते, जलते अंगार की तरह दर्शाते हैं, यह उस तड़प को दर्शाता है जो न तो अचानक पैदा होती है और न ही अचानक समाप्त होती है बल्कि भीतर ही भीतर सुलगती रहती है। यह तड़प उस सर्वव्यापी स्रोत के मूल तत्व से पुनर्मिलन की है और उस जुड़ाव को बेचैनी से याद करने की है जो समय की सीमाओं से परे है। इस अर्थ में, यह जलन केवल पीड़ा ही नहीं बल्कि आंतरिक खोज का भी एक संकेत है। यह मनुष्य की उस अवस्था को दर्शाता है जो गहन वास्तविकता की ओर अपनी आंतरिक खोज जारी रखती है जिससे वह खुद को अलग महसूस करती है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com